दलित संवेदना के आइने में प्रेमचन्द का कथा साहित्य

हरिश्चन्द यादव

प्रेमचन्द की रचनाओं का दलित विमर्श सम्बन्धित मूल्यांकन करने से पूर्व उस समय (1920–1936) की दलित–समस्याओं पर राजनीतिज्ञों की सोच, सामाजिक मान्यताओं, दृष्टिकोण, विद्वानों, लेखकों की धारणाओं, विचारों आदि को जानना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इसी दौर में स्वतंत्रता–आन्दोलन, नवजागरण, आर्य समाज, ब्रह्म समाज, कांग्रेसी विचार धारा, हिन्दू महासभा, गाँधी जी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर आदि के आन्दोलन अपने शिखर पर थे। हिन्दी साहित्य में यही काल छायावाद के नाम से जाना जाता है। प्रेमचन्द का समूचा रचना कर्म इसी दौर का है। यह समय, गहरी उथल–पुथल से भरा हुआ था। इसी दौर में मजदूर वर्ग, दलित वर्ग, स्त्री वर्ग ने भी अपनी शक्ति का परिचय दिया था। हड़तालों का ऐसा सिलसिला जो इससे पूर्व भारत में कभी नहीं हुआ। दिसम्बर 1918 में बम्बई के मिलों में हड़ताल शुरू हुई थी और 1919 तक एक लाख से ज्यादा मजदूर इसमें शामिल हो चुके थे। 1919 के शुरू में ही रौलट एक्ट पेश किया गया था। और मार्च में इसे लागू कर दिया था।